cities, the concept of putting dished antenna in multistoried buildings for direct reception is catching on.

Beaming Madras programmes through satellite is technically feasible because: Original INSAT programme provides for permanent as well as portable earth stations at Madras.

Therefore, once the Government decides to permit Madras TV to relay programmes through satellites and release one channel in INSAT for this purpose, this could be effected almost immediately.

I strongly condemn the callous attitude of the Central Government to the urgent need of Tamil Nadu and request steps to fulfil the demand.

OUTBREAK AND SPREAD OF ENCEPHALITIS IN TAMIL NADU AND ANDHRA PRADESH

SHRI T. R. BALU (Tamil Nadu): Madam Deputy Chairman, I rise on an important issue which is persistently threatening the country particularly Tamil Nadu and Andhra Pradesh, *i.e.* the brain fever, otherwise called as the Japanese B. Encephalitis. This viral brain fever has so far claimed the lives of 185 children in Tamil Nadu. The districts of South Arcot, Tanjore, Chingleput North Arcot, Trich Ramanathapuram, Tinneveli, Salem and Dharampuri are the most affected areas In all 386 children in 277 villages have been affected. As far as Andhra Pradesh is concerned, the dreaded disease has claimed 360 lives of children in Kurnool, Guntur and Prakasam districts.

Madam, the disease carried by mosquitos is marked by fever which grows in intensity, pain in head and back, stiff neck, unconsciousness and even paralysis or sudden death. The virus, carried by qulex mosquitos multiplies in the blood of pigs after the animals are bitten by the mosquitos. The preventive vaccine available in Japan which costs Rs. 30 per vial, would be supplied only by orders and that too, due to ban order of the Indian Government, the drugs could not be imported. This state of affairs has to be viewed rather seriously and the ban order on import of medicine shall be removed immediately, so that the lives of the children could be saved in time. In November 1978, the epidemic swept through the States of Assam, West Bengal Uttar Pradesh, Bihar and Madhya Pradesh, and as many as 1300 fatalities were recorded. In 1981 again in the month of November parts of Andhra Pradesh, Tamil Nadu and Karnataka came under the lethal influence of the viral fever. A high incidence of the disease was reported from Anantapur, Kolar, Tumkur, Tirunelveli and Tirichirapally districts in the three States of Andhra Pradesh, Karnataka and Tamil Nadu. Hence I request the Treasury Benches to kindly look upon this situation and the danger that has been posed to this country due to this disease since 1978. Nearly nine years have passed. It is rather unfortunate that neither the Central Government nor the state Government have made serious efforts to fight the disease. That shows the careless attitude of the Government. I request the Health Minister, through you, Madam to make a statement on the steps taken to eradicate encephalitis. Thank you.

REFERENCE TO THE NEED FOR PROTECTION AND DEVELOPMENT OF BODH STUPAS IN MADHYA PRADESH

श्री केशव प्रसाद शुक्ल (मध्य प्रदेश) माननीय उपसभापति महोदया, मैं आपकी आज्ञा से केन्द्रीय शासन का ध्यान ऐतिहासिक एवं पुरातत्व महत्व के बौद्ध स्तूपों की ओर आकर्षित करता हूं। मध्य प्रदेश के रीवा जिले के त्योंथर तहसील के ग्राम देउर कोठार के पहाड़ी क्षेत्र में जो रीवा इलाहाबाद राजमार्ग नं० 26 पर रीवा से 60 किलोमीटर पर स्थित है वहां पर तीन बौद्ध स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए है। यहां प्राप्त शिलालेख से पता चला है कि तीनों स्तूपों शुंग वंशीय शासक धनमूर्ति (240 ई० पू०) और वाघपाल द्वितीय (210 ई० पू०) के

[श्री केशव प्रसाद शुक्ल]

शासन काल में बनवाए गए । बोद्ध ग्रन्थों में कोशाम्बी तथा भरहुत के मध्य गहन वन प्रान्त में टमस नदी के किनारे पर स्थित ये स्तूप शुंग काल में कोशाम्बी से भरहुत के मफुय त्रिपुरी तक जाने वाले माग पर स्थित थे और बोद्ध भिक्षुओं की साधना स्थल तथा विश्राम स्थल मेंके रूप में उसका उपयोग होता था । इनके पास ही शैलाश्रों, शैल चित्र तथा ब्राह्मी लिपी में शिलालेख प्राप्त हुए हैं ।

ये स्तूप सांची, सारनाथ के स्तूपों की भांती ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय महत्व रखते हैं । इनको नष्ट होने से बचाने की आवश्यकता है तथा सुरक्षा एवं संरक्षण की दिशा में शीघ्र कार्यवाही करने की आव - श्यकता है तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा इन स्तूपों को अपने संरक्षण में लिया जा कर बोद्ध धर्मासवम्बियों के तीर्थ स्थान के रूप में तथा पर्यटन स्थल के रूप में इस स्थान का विकास करने की आवश्यकता है । अत: मैं आपके माध्यम से मानव संसाधन मंत्री महोदय का ध्यान इस ओर आकृष्ट कर उनसे अनुरोध करता हूं कि इन स्तूपों को राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में संरक्षण देकर इस स्थल को बोद्ध तीर्थ स्थल एवं पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने की कृपा करें ।

REFERENCE TO THE DROUGHT AND FAMINE CONDITIONS IN SOME PARTS OF RAJASTHAN

श्री धूलेश्वर मीणा (राजस्थान) : मैडम उपसभपति महोदया, मैं इस स्पेश्यल मेंशन के द्वारा आपकी मार्फत सरकार का ध्यान एक बहुत ही महत्वपूर्ण इश्यू की तरफ ले जाना चाहता हूं । कल के राजस्थान के लोकल पेपर में एक ऐसी न्यूज आई है कि उदयपुर जिले में खास कर धरिमावद और एक दो तहसीलें और हैं वहां के निवासी इस फैमिन के कारण प्रभावित होकर अपने गांवों को छोड़ कर बाहर जा रहे हैं , पलान कर रहे हैं। करीब दो साल से देश में भयंकर अकाल पड़ रहा है खास करके राजस्थान के उन आदिवासी क्षेत्रों में जो कि आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र हैं, जैसे उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, चित्तौड़ और भीलवाडा ऐसे एरियाज में जहां पर आदिवासी लोगों को अपने भर-पेट खाने-पीने के और अपने बच्चों को पढ़ाने के साधन बहुत कम उपलब्ध है और दो साल से लगातार अकाल पड़ने के कारण उन लोगों की हालत बहुत ही खराब हो गई है । उनके पास खाने-पीने का कोई साधन नहीं है । पशुओं को चराने के लिए, उनको चारा डालने के लिए भी उनके पास साधन नहीं है । कुछ लोग खासकर के दूसरे स्टेट बोर्डर पर जो रहते हैं राजस्थान के दक्षिणी हिस्से में, गुजरात या मध्यप्रदेश और खासकर के गुजरात में कपास का काम करने के लिए जाते हैं । लेकिन वहां पर भी इस साल कपास का उत्पादन बहुत कम होने से लोगों को काम नहीं मिल रहा है और वे लोग दो-एक महीने काम करके वापस लोट रहे हैं इसलिए मैं इसी मकसद से इस स्पेशल मेंशन के द्वारा आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि यहां पर लोग अपने गांवों को खाली करके भाग रहे हैं, इसको रोकने के लिए केन्द्रीय सरकार राजस्थान सरकार को अधिक से अधिक मदद करे आर्थिक मायनों में और कई एक दूसरे मायनों में भी ।

महोदया, राजस्थान एक ऐसा राज्य है, जहां चाहे अच्छा वर्ष भी हो, तब भी खासकर के पश्चिमी रास्थान में तो हमेशा अकाल पड़ता रहता है । लेकिन अब तो दो साल से, तीन साल से लगातार सारे राजस्थान में अकाल है और लोगों के पास कुछ भी खाने-पीने का साधन नहीं है, मवेशियों को जिन्दा रखने के लिए चारा नहीं है । ऐसी स्थिति में केन्द्रीय सरकार राजस्थान सरकार को अधिक से अधिक सहायता दे और हिदायत दे कि ऐसे एरिया में अधिक से अधिक और जल्दी राहत कार्य शुरु करे । यहां पर हम हर साल सड़कों पर धूल डाल देते हैं और बारिश आती है और वह जाती है । मैं बार-बार इस हाऊस में कह चुका हूं कि ऐसे स्थानों पर पक्के काम किए जायें ताकि लोगों की इस प्रकार की समस्याएं हमेशा-हमेशा के